बिहार सरकार

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

(पशुपालन प्रभाग)

पी0 पी0 आर0 (Peste des petits ruminants) रोग भेड़ों एवं बकरियों के लिए जानलेवा

पी0पी0आर0 मुख्य रूप से बकरियों एवं भेंड़ों की एक संक्रामक बीमारी है। यह बीमारी एक प्रकार के विषाणु (मोरबिली वायरस) के द्वारा होती है। इसके विषाणु रिन्डरपेस्ट से मिलते जुलते हैं। यह बीमारी भारत में सर्वप्रथम 1989 में तमिलनाडु राज्य में पायी गयी थी। पुनः पश्चिम बंगाल में यह बीमारी 1994 में देखी गयी। यह बीमारी भेंड़ों की अपेक्षा बकरियों में ज्यादा जानलेवा होती है तथा चार माह से 1 वर्ष के बीच के उम्र के पशुओं के लिए ज्यादा घातक होती है। इस रोग को ''काटा'' या ''गोट प्लेग'' के नाम से भी जाना जाता है। यह एक छुआ-छूत की बीमारी है और झुण्ड के सभी पशुओं (भेंड़ एवं बकरी) को तेजी से प्रभावित करती है एवं प्रभावित पशुओं में 20 से 90 प्रतिशत पशुओं की मृत्यु हो जाती है।

लक्षण

1. बीमार पशुओं में तेज बुखार, पशु का सुस्त हो जाना, बाल खड़ा हो जाना एवं पशु छींकने लगते हैं।
2. बीमारी से प्रभावित पशुओं के आँख, मुँह एवं नाक से पानी की तरह स्राव निकलता है जो आगे चलकर गाढ़ा हो जाता है। आँखों के पलक सट जाते हैं।
3. पशु को श्वांस लेने में कठिनाई होती है।
4. बीमारी के दो-तीन दिन के बाद मुँह के अंदर का भाग काफी लाल हो जाता है। बाद में मुँह, मसूढ़ा, जीभ एवं जबड़े के आंतरिक त्वचा पर छोटे-छोटे भूरे रंग के धब्बे देखे जाते हैं।
5. तीन-चार दिन के बाद पतला दस्त होने लगता है। प्रभावित पशु का बुखार कम होने लगता है और किसी-किसी पशु में सामान्य से भी नीचे आ जाता है।
6. रोगग्रस्त पशुओं में एक सप्ताह के अंदर मृत्यु होने लगती है।

उपचार (पशु चिकित्सक की देख-रेख में)

यह विषाणुजनित बीमारी है, अतः इस बीमारी का कोई विशिष्ट उपचार उपलब्ध नहीं है। फिर भी Secondary Bacterial Infection की रोकथाम निम्नांकित दवाओं से की जा सकती है :-

1. बीमार पशुओं के आँख, नाक एवं मुँह को फिटकरी के पानी से नियमित रूप से साफ कर बोरो ग्लीसरिन का उपयोग किया जाए।
2. एनरोफलॉक्सासीन की सुई या सीफ्लोक्स टी. जेड. की गोली दी जाए।
3. बुखार नाशक दवा का उपयोग किया जाए।
4. मल्टी विटामिन दिन में एक बार दिया जाए।

बचाव एवं रोकथाम

1. रोग फैलने की स्थिति में इसकी सूचना यथाशीघ्र नजदीकी पशु चिकित्सक को दें। स्वस्थ पशुओं को बीमार पशुओं से अलग रखने की व्यवस्था करें।
2. जिस क्षेत्र में बीमार पशुओं को चराया गया हो उस क्षेत्र में चराई हेतु स्वस्थ पशुओं को नहीं जाने दें।
3. बिक्री हेतु बाजार में भेजे गये पशुओं को नही बिकने की स्थिति में घर में मौजूद अन्य पशुओं से अलग रखा जाय।

टीकाकरण

1. चार (4) माह की आयु से उपर के सभी मेमनों/बकरियों/भेंड़ों में पी0पी0आर0 रोग के विरूद्ध टीकाकरण अवश्य कराया जाए। एक बार टीका लगने के बाद तीन साल तक पशु इस बीमारी से सुरक्षित रहते हैं।
2. सभी पशुओं में पी0पी0आर0 टीका पशु चिकित्सक के सलाह से दिलवाना चाहिए।

कार्यक्रम की विशेष जानकारी निकटवर्ती पशु चिकित्सालय/ सबंधित जिला पशुपालन कार्यालय अथवा पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना (दूरभाष संख्या 0612-2226049) से प्राप्त की जा सकती है।

पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार, पटना द्वारा जनहित में प्रचारित